घूँघट

[हास्यपूर्ण सामाजिक-प्रहसन]

आज की इस सभ्यता को,
इस श्रुती का क्या पता ?
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,
रमन्ते तत्र देवता !!

— 'भगवत'

लेखक—

भगवत् स्वरूप जैन 'भगवत्'

घूँघट



[सामाजिक हास्य-पूर्ण प्रहसन]

प्रकाशक—

श्री भगवत-भवन

पुस्तकालय

एत्मादपुर

(आगरा)

मूल्य—चार आना

पात्र-सूची

१—मि० दिलफड़क	... ...	एक जैंटिलमैन
२—वोबी	... ...	मि० की स्त्री
३—टेसुआ	... ...	नौकर
४—घिचपिचराय, भोजन-भट्ट, गड़बड़चन्द	...	तीन दोस्त

मुद्रक—कपूरचन्द जैन,
महावीर प्रेस,
किनारी बाज़ार, आगरा।

प्रथमवार सन् १९३८

'समाज की आग' को लोग इतनी सफलता देंगे, मुझे इसकी उम्मीद न थी ! वजह इसकी यह थी, कि किसी भी लेखक की प्रथम रचना आदर नहीं पाया करती ! क्योंकि वह स-दोष होती है ! लेकिन मैं अपने पास इस सबके लिये सिवा थैंक्स के और कोई ऐसी चीज नहीं पाता, जिसके द्वारा प्रेमी-पाठकों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन कर सकूँ!

साथ ही उन्हें भी नहीं भूल सकता, जिन विद्वानों ने बिना माँगे ही उस असुन्दर-रचना पर भी अपनी सुन्दर बहुमूल्य सम्मतियाँ दे, मुझे प्रेम-पाश में बाँधने की चेष्टा की ! एवं उन ड्रैमेट्रिक—क्लब पदाधिकारियों का भी अभिनन्दन करूँगा जिन्होंने उसे उचित-रूप से जनता के आगे पेश कर, नाटक की सफलता में चार चाँद लगाए !

प्रस्तुत-रचना 'घूँघट' (सामाजिक-प्रहसन) को आपके हाथों तक आने का श्रेय भी उन्हीं प्रेमियों की मधुर-प्रेरणा को है, जिसने अजेय-सी शक्ति लेकर मुझे विवश किया। 'घूँघट' मैंने कुछ दिन पहले लिखा, और तभी से अधूरा पड़ा हुआ था। मेरा ध्यान उसकी ओर दिलाया गया। फलतः अब आपके सामने है। मैं मानता हूँ कि पर्दे की समस्या विवादस्थ है, योंहीं हँसी में उड़ा देने की बात नहीं! लेकिन, घूँघट' जिस दृष्टिकोण को लेकर लिखा गया है ! अवश्य ही पर्दे का वह पहलू समाज के लिए अलाभकारी है ! अतः उम्मीद है नाटक की भांति इसे भी अपनाने की दया दिखाएँगे।

सविनय—

'भगवत्' जैन।

शरदीय-पूर्णिमा
सम्वत् १९९५

—ड्रामे की प्रेयर—

आओ, श्री जिन आओ, आओ!
एक बार फिर भू-मंडल को—
आकर महिमा मयी बनाओ!!
दुख-जल अविरल बरष रहा है,
जन दल सुख को तरस रहा है;
भूलो सब अपराध हमारे—
सोचो, विरद तुम्हारा क्या है?
भंवर केन्द्र में जीवन-नैय्या,
विचलित-मन हो रहा खिवैय्या;
तुम्ही दयामय कहलाते हो—
भव-सागर से पार लगाओ!—आओ० !
ज्ञान विवेक प्रेम-सित धारा,
सत्य-अहिंसा-धर्म विसारा;
धर्म-कर्म से रहित नर्क सम—
फैल रहा जग में अंधियारा!
भीरु बन चुके अखिल-हृदय-तल,
भूल गए अपना अगाध-बल;
नव-जीवन का पथ दिखला कर—
'भगवत्' प्रिय-सन्देश सुनाओ!
आओ, श्री जिन आओ, आओ!!

———

घूँघट

[सामाजिक, हास्य-पूर्ण, प्रहसन]



पहला-दृश्य

[स्थान—रंगभूमि, मि० दिल फड़क का यूरोपियन-ड्रेस में, निराले ढङ्ग के साथ प्रवेश]

मि० दिल०—(स्वगत) हत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी। बोलो ?—कहाँ मैं न्यू-लाइट का भकभकाता उजाला, कहाँ वह टिमटिमाती हुई पुराने-ज़माने की लैम्प। न तमीज़ न अज़ीज़, एकदम बेहूदा चीज़ ! यह तो कहो कि ईंजानिब अबतक—भलमनसाहत का पल्ला पकड़े हुए—निभाहे चले जा रहे हैं ! वरना वह ?—जो न शाम को हाथ में हाथ डाले टहलने को जाती है, न दोस्तों की पार्टियों में शरीक होने ! भला यह भी कोई बात है।

अरे, आँख मौजूद, कान मौजूद, नाक मौजूद !

ग़ैरह-वग़ैरह जो चाहिए सब मौजूद ! फिर मुँह पर हाथी की सूँड़ बनाने की ज़रूरत क्या ?—कम्पिटीशन ही करना था तो गधी से करती !......पर्दा ? किसका पर्दा, कैसा पर्दा, कहाँ का पर्दा, समझ में नहीं आता, आख़िर है क्या बला ?

दोस्तों के ताने सुनते-सुनते कलेजा ख़ाक हो गया, लेकिन इस पर्दा-नशीं ने पर्दा न उलटा ! और तारीफ़ यह कि--मुझ नेकवक्त पाँच फ़ुट साढ़े-सात इञ्च के लम्बे-चौड़े मर्द को हमेशा उल्लू ही बनाती रही। मगर......हाँ ! अब देखूँगा कि वह कैसे अपनी ही चलाती है ! मैं कोई ग़ैर थोड़ा हूँ, मर्द हूँ ! उसका इकलौता; क़ानूनी-मर्द ! (नैपथ्य की ओर देखते हुए) अरे--टेसुआ !......ओ टेसुआ !... हत्तेरी ऐसी कम तैसी ! कम्बख़्त मर गया कि ज़िन्दा है ?

(टेसुआ का अपनी ही धुन में गाते हुए प्रवेश)

(गाना)

टेसुआ०--नौकरी सब से चोखा-काम !
न इसमें लगती एक छदाम !!
नफ़ा और टोटे का झगड़ा,
रक़म डूब जाने का रगड़ा;
अलग आफ़तों से यह दगड़ा--
जाता केवल-धाम ॥ नौकरी० !!

लाट-साब बनि आयु बितावैं,
खेलें, कूदें मौज उड़ावैं;
जब तारीख़ तीस आजावै—
ले लो अपने दाम ॥ नौकरी० !!

रहैं सेठजी तो कलकत्ते,
तोड़ो ख़ूब मधू के छत्ते;
दिन-भर खेलो कैरम पत्ते--
करो ऐश-आराम ॥ नौकरी० !!

मि० दि०—(टेसुआ के कन्धे पर धक्का देते हुए) अबे, अपनी ही धुन में लगा रहेगा कि कुछ मेरी भी सुनेगा ?—क्या मज़ा है, नौकरी पायेगा मुझ से और गाना गायेगा अपना ! इत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी। कम्बख़्त नौकर भी ऐसा मिला है कि वल्लाह ! न मालिक के के हुक्म की पर्वाह, न मालिक की। काम के वक्त पुलिस के चौकीदारों की तरह ग़ायब, और तनुख़ाह के वक्त इन्कम टैक्स के लम्बे-लिफ़ाफे की तरह जान पर सवार ! (टेसुआ की तरफ़ मुख़ातिब होकर) सुनता है ?—आज मेरे यहाँ दोस्तों की टी-पार्टी का इन्तज़ाम होगा, और उस वक्त तेरी मालिकिन को ज़रूर आना चाहिए—समझा ?

टेसुआ०—(मुँह बनाकर) समझा तो, मगर हुज़ूर क्या माल-किन......?

मि०—(डपट कर) मालकिन क्या ? अरे, आज कल मियाँ-बीबी दोनों किसी जल्से में शरीक नहीं होते तो गँवार समझे जाते हैं ।

टेसु०—मगर.........मालकिन क्या चाय पिलावेंगी—हुजूर ! हाँ अगर दूध की बात होती तो.........?

मि०—हत्तेरी ऐसी कम तैसी । चल, बेवकूफ़ ! नालायक़, गदहा कहींका...... !

टेसु०—(बात अनसुनी करके) हाँ, तो सरकार ! मालकिन तो न आवेंगी, पर न आवेंगी । वे भला आपके उजले-पोश-बदमाश दोस्तों के सामने आकर, क्या अपनी खूबसूरती बाँट कर उन्हें खुश करेंगीं ? ना, सरकार ! यह तो वह कभी मंजूर न करेंगीं ।

मि०—चुप, सुअर । मालूम पड़ा कि यह तेरी ही साजिश का नतीजा है कि वह दिन-पर-दिन अपटूडेट बनने से पिछ-ड़ती जा रही है । और मैं अपनी फूटी-तक़दीर को लाख लाख सैल्यूशन से चिपकाने पर भी नहीं जोड़ पाता । देख, कमीने कुत्ते ! अब ऐसी गुस्ताखी से बाज़ आ । नहीं तो वह मार पड़ेगी कि सर माइकेल ओ डायर का ज़माना याद आ जायेगा ।

टेसु०—मगर सरकार......... !

मि०—(बात काट कर) अबे, सरकार के बच्चे ! तू नौकरी पाता है मुझ से और वकालत करता है मालकिन की। हत्तेरी ऐसी कम तैसी ।

टेसु०—मार डाला……! हुजूर यह तो जमाने की रफ्तार है! आदमी पिटे तो बचाने वाले दिन में मसाल लेकर ढूँढ़ने पर भी न मिलें और किसी औरत से जरा-सी गर्म-मिज़ाजी की बातें शुरू हों कि सैकड़ों आदमी उछलते-जोश को लिए टीड़ी-दल की तरह छा जायें! और उस पर तो वह मेरी मालकिन हैं मेरे जिस्म की………और दिल की………!

मि०—मर, कम्बख्त! क्या बकता है? मेरे ही सामने मेरी जोरू को अपने दिल की मालकिन बनाता है। हत्तेरी ऐसी कम तैसी।

टेसु०—तो इसमें बेजा क्या है—सरकार! आज कल तो जरा पार्क में हवा खाने गये कि जिधर जरा चमक-दमक से लिपी पुती कोई पुतली नजर आई कि बना बैठे अपने दिल की मालिक। इस पर मैं तो ज़िन्दगी के लम्बे-लम्बे दश-वर्ष मालिकिन की ख़िदमत में गुज़ार चुका हूँ।

मि०—चुप, नाबकार!

टेसु०—जी, सरकार!

मि०—सुन, मैं दोस्तों की पार्टी का बन्दोबस्त करने जाता हूँ। तू मालिकिन को उसमें शरीक होने का बन्दोबस्त कर, समझा?

टेसु०—(मुँह बनाकर) समझा तो मगर कुछ फीका। (पलट कर) क्यों सरकार! अगर मालकिन न आएं तो उन्हीं

की उम्र की किसी दूसरी का इन्तज़ाम कर रखूँ ?

मि०—चल, बेवकूफ़ ! दोज़खी जानवर !

(जाना)

टेसु०—(स्व-गत) मार डाला ! बस, नौकर की तक़दीर में अगर कहीं पंक्चर है, तो यहीं ! दिन-भर में इतनी गालियाँ मिलती हैं, कि अगर वह सब रोटी बन जाऐं तो सारी दुनियाँ खाए पर खत्म न हों।

पर क्या फ़िक्र है—हजरत टेसूमल ! ऊँह ! यह सब तो दुनियां का झगड़ा है ! वरना—नौकरी से अव्वल, उम्दा, और बे जोखिम-पेशा और है-ही कौन ?—वाह्रे मेरे तमीज मन्द बुजुर्गो ! पेशा छाँट कर अपनाने में तो तुमने कमाल कर दिया ! भई, तभी तो ईंजानिब खान्दानी-मुलाज़िम कहाने का फख्र हासिल कर पाये हैं ! बड़ी खुश किस्मती की बात है—वाह्रे हम !

(जाना)

दूसरा—द्रश्य

[स्थान—कमरा, टेसुआ आकर टेबिल और कुर्सियाँ लगाता है, फिर चाय के प्लेट-कप वग़ैरह रखता है ! उसी समय मि० दिलफड़क आते हैं ! तीन दोस्त—घिचपिच राय, गड़बड़ चन्द और भोजन भट्ट—आते और हैन्ड शेक के बाद कुर्सियों पर डटते हैं !]

मि०—अबे, टेसुआ···!

टेसु०—जी, सरकार…!

मि०—जा, मिस जानूं को बुला ला !

टेसु०—(स्वगत) मार डाला (प्रगट) अभी लीजिये सरकार—उन्हें तो पहले ही इन्वीटेशन दे चुका हूँ !

[जाता है, फिर एक गाने वाली के साथ प्रवेश, डान्स होने के बाद—बातें चलती हैं]

घिचपिच०—(चाय का कप रखते हुए) क्या खूब ! यही तो जिन्दा दिली है मिष्टर दिल फड़क ! मगर एक बात का मुझे सख्त अफ़सोस है, कि……!

भोजनभट्ट—(चाय फूँकते हुऐ) अफ़सोस…?—अफ़सोस ?

टेसुआ०—(स्वत:)-हाथमें प्याला रकाबी चाय लिपटन-तोष की !
है मुझे अफसोस, फिर है बात क्या अफसोस की !!

घिचपिच०—हाँ, अफ़सोस ! और वह महज इस बात का कि…!

गड़बड़चन्द—(घूँट निगल कर) किस बात का मिष्टर घिचपिचराय !

घिच०—हमारे दोस्त मि० दिलफड़क एक तजुर्बेकार-निहायत-सौफ्ट-दिल अपटूडेट-जैंटिलमैन जीव हैं !

भोज०—(घबड़ा कर) हैं ! हैं !! जीव मत कहो ! आदमी कहो, आदमी ! जीव का मतलब हुआ—जानवर ! और आदमी का—जैसे हम !

टेसु०—(स्वत:) मार डाला ! वाहरे आदमी !—
आदमी बनते हैं खुद, पर आदमी क्या चीज़ है।
इस ज़रा-सी बात की भी ताव है न तमीज़ है !!

घिच०—वाह ! वाह ! क्या कमाल किया है—मिष्टर भोजन-भट्ट ? खैर ! मुझे अफ़सोस है—इतना सब होते हुए भी दिलफड़क-बाबू कभी क़ायदे की पार्टी न कर सके !... बस यही !

मि०—(स्वतः) हत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी ! फिर वही बात ? बड़ी परेशानी की बात है—ओह !

गड़बड़—वाकई ! यह तो बड़े शर्म की बात है ! क्यों मिष्टर दिल फड़क ! क्या आप इतना भी नहीं कर सकते ?—तो क्या तुम्हारी शादी-शुदा बीबी नहीं ?

टेसु०—(स्वतः) मार डाला !—

धूर्त, लम्पट दोस्तों का रङ्ग अब जमने लगा !
घर की कम्बख्तीके दर्वाजे का पर्दा अब खुला !!

गड़बड़—कुछ भी सही, यह तो हम भी कहेंगे कि हमारे दिल फड़क बाबू की सारी जैंटिलमैंनी पर पानी पड़ रहा है ! वर्ना—यह बात ?—कि आपकी बीबी और देहात की कलूटी औरतों की तरह मुँह छिपाये !

भोजन०—ज़रूर कुछ बात होगी ! तभी......!

टेसु०—(स्वतः)—बात के पर्दे के भीतर दिल की गहरी-घात है !
है इधर दिनका उजाला, उधर काली रात है !!

मि०—(तेज़ी से) खूब हुई बात ! अभी मैं उसे खींच कर लाता हूँ । वाह ! आखिर वह समझती क्या है—मुझे ?

घिच०—(स्वतः) उल्लू !

मि०—(झुँझलाकर) कुछ भी हो, मैं उस बिना इस जल्सेमें शरीक किये चैन न लूँगा !

जाना)

टेसु—(स्वतः) गए···?—गए ?—

अपने मजहबसे गये और अपनी दुनियाँसे गए !
झूँठी, मीठी-शान पर फैशन में आ ललचा गए !!

घिच०—(घूमकर) वाह दोस्त, गड़बड़ चन्द ! मानते हैं—गहरा रंग फेंका !

[मि० दिलफड़क का अपनी स्त्री को खींचते हुए लाना, लँहगा-डुपट्टा, हाथ-भर का घूँघट पुराने जमाने की पोशाक !]

स्त्री०—(गिड़गिड़ा कर) माफ़ करो, माफ़ करो ! बे-पर्द न करो—प्राणेश्वर···!

मि०—हत्तेरी ऐसी कम तैसी ! पर्दे को मनहूस रिवाज ! जब देखो तब पर्दा ? पर्दा ? किसका पर्दा ?

स्त्री०—(सविनय) परदा···?—

कौन पर्दे से बचा है पाक-रू पर्दे में है !
जिन्दगी का खास जरिया यह लहू पर्दे में है !!
जीना-मरना, ऐशो-इशरत, ख्वाहिसो सब नेकोबद—
रंग है गुल पर मगर वह मस्त-बू पर्दे में है !!
फूलते-फलते हैं पौधे खींच कर आबो हवा—
पर हकीक़त देखिये तो आबरू पर्दे में है !!

एक दिन जाते हैं मिल इस खाकके पर्देमें सब—
सारी दुनियाँ जिसकी खादिम वह प्रभू पर्देमें है !!

भोज०—भई वाह ! मिष्टर दिल फड़क ! बीबी क्या है—पैदाइशी एडवोकेट है ।

टेसु०—(मुँह बनाकर) मार डाला ! मुझसे पूछो पर्दे की बात—

जब हुए पैदा तो घर बच्चों तलक पर्दा रहा !
मर गए तो जिस्म पर फ़ौरन कफ़न डाला गया !!
फिर बचा पर्देसे क्या इसको मुलाहिजा कीजिए !
बाद में जो दिल कहे उस बातको कह लीजिए !!

गड़बड़०—तभी तो बाबू साहब बी०ए० पास ही नहीं, बीबी पास भी हैं !

घिच०—मगर इस रेल्वे-पार्सल के भीतर क्या भरा है, यह तो पता ही नहीं !

भोजन०—अरे भाई ! जरूर कुछ दाल में काला है, तभी ! नहीं, मुँह न खोलती—मजाल है ! मर्द की बात और वह भी न मानी जाँय ?

मि०—हत्तेरी ऐसी कम तैसी ! बस, अब बर्दाश्त नहीं !—

मर्द था मर्दानगी की ताब से पुरजोश था !
पर शराफ़तके सबब अबतक रहा खामोश था !!
अब मिटाकर ही रहूँगा पर्दये बेहूदगी !
मैं दिखाऊँगा तुझे अब फैशनेबुल जिंदगी !!

स्त्री०—(करुण-स्वर में) मेरे देवता ! मुझे माफ़ करो !—

लाज रक्खो, शर्म रक्खो है यही भारतीयता!
मत विदेशी चाल पर वारो स्वदेशी सत्यता!!
देव! ठुकराओ न मेरी प्रार्थना यह मान लो!
इमीटेशन औ' जवाहर दोनों हैं पहिचान लो!!

मि०—शटअप्...! शर्म...?—लाज...?

शर्म आँखों की मुनासिब, खल्क यह बतला रहा!
लाज में भी बेहयाई गर रही तो क्या रहा?

स्त्री०—शर्म आँखों के लिए घूँघट मुनासिब चीज़ है!
इस लिए ही अक्लमन्दों ने किया इसे तजबीज़ है!!
देखिये पुतली पै पर्दा है पलक का यों पड़ा!
भूल पर्दे को न जाओ कह रहा सब से खड़ा॥

मि०—(क्रोध के साथ) फिर भी पर्दा? हर तरफ़ पर्दा?—हत्तेरी ऐसी कम तैसी!—

बस, बहस कर बन्द अपनी, है सभी बे क़ायदा।
आज से लागू करूँगा फैशनेबिल-क़ायदा॥
बहुत समझाया बुझाया पर नतीजा क्या मिला?
देख अब तू मर्द की मर्दानगी का फैसला॥

(मि० दिल फड़क स्त्री के घूँघट को उलट देते हैं। सब लोग 'वाह' 'वाह' करते हैं। टेसुआ 'मार डाला' चिल्ला उठता है। स्त्री बालों को मुँह पर डाल लाज बचाने की कोशिश करती है।)

भोज०—वाह! शाबाश!—

लो, सराहो दोस्त इस फूटी हुई तक़दीर को !
ढक दिया था बादलों ने चाँद की तस्वीर को !!

घिच०-(उठते हुए)-अब कहेंगे हम यक़ीनन दोस्त ग्रेज्युऐट हो ॥
फैशनेबिल इंडिया के एक अपटूडेट हो ॥

(दोस्तों का तथा टेसुआ का जाना)

स्त्री०—(रोते हुऐ) स्वामी !—

कर दिया बे पर्दा मुझको पर-पुरुष के सामने !
धर्म से मुझको गिराया इस तुम्हारे काम ने !!
क्या सबलता है तुम्हारी सिर्फ़ अबला के लिऐ !
आप ही इस बात का इन्साफ़ दिल से कीजिये !!

मि०—(घुड़क कर) शटअप् ! मैं तुम से सख़्त-नाराज हूँ । इतने दोस्तों के सामने ज़ुबाँदराज़ी करने का तुम्हे कोई हक़ न था । हत्तेरी ऐसी कम तैसी !

(जाते हैं । पीछे-पीछे स्त्री 'नाथ' 'नाथ' पुकारती जाती है)

तीसरा-दृश्य

[स्थान घर, मि० दिलफड़क कुर्सी पर आकर डट जाते हैं ! स्त्री भागती हुई आकर बूट - सहित पैर पर हाथ फेरती है, छू कर माथे से लगाती है ।]

स्त्री०—(गिड़गिड़ा कर) माफ़ करो—स्वामी ! मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ ! पैरों पड़ती हूँ ! तुम्हारी नाख़ुशी लायक मैं कहाँ ?—

तुम्हारी ही ख़ुशी में है मुकम्मिल ये ख़ुशी मेरी !
कि नाराज़ी से लिपटी है नरक की जिन्दग़ी मेरी !!
हमारे देश की शिक्षा सभी सन्ताप खोती है !
जो पतिको मानती ईश्वर वह नारी धन्य होती है !!

मि०—(बूट की ठोकर मार कर) हत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी !…चुप, चाण्डालिन दूर हट !

जलाया था मुझे तब तूने कुफ़्रे बद ज़ुबानी से !
बुझाया चाहती है अब रहम के सर्द पानी से !!
दूर हट, मैं ऐ—सी औरत से बाज़ आया !
(मि० दिलफड़क हटते हैं, स्त्री रोते-रोते पैर पकड़ती है)

स्त्री०—(करुण-स्वर में) तुम्हारे विना मुझे इस दुनियाँ में क्या रहता है ? रहम करो, स्वामी !

मि०—(तेज़ी के साथ) मुझे छोड़ कर सब-कुछ !

स्त्री०—लेकिन…?—लेकिन मेरे 'सब-कुछ' तो आप हो।

भारती-नारी का सब-कुछ नाथ है परवरदिगार !
उसके जीवन से बँधा है भाग्य का हर एक तार !!

मि०—(हँसते हुए) ख़ूब ! अरे, औरत अब मियाँ के मरने से राँड नहीं होतीं ! असल में भाई के मरने पर राँड होती हैं। मियाँ बनने को सैकड़ों तैयार, लेकिन कोई माई का लाल भाई भी बनना चाहता है ?—

स्त्री०—(आश्चर्य से) हैं, यह आप……?

मि०—मुझे तेरी बेतुकी बातें सुनने की फ़ुर्सत नहीं। उधर हट !

(मि० दिल फड़क ज़ोर का एक धक्का देकर जाते हैं ! वह गिर जाती है ! टेसुआ का प्रवेश)

टेसु०-(स्वतः) मारडाला ! हैं, नारी का यह अपमान ?—

आज की इस सभ्यता को इस श्रुती का क्या पता ?
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ॥

(प्रगट) स्वामिनी ! उठो, अब उठने का समय आगया है !

उठ रहा है देश अब परतन्त्रता-पाताल से।
उठ रही है कालिमा जग-सेवकों के भाल से ॥
उठ रहा है चीन जर्मन और इँगलिस्तान भी।
उठ रहे हैं रूस, इटली टोकियो जापान भी ॥
उठ रहीं हैं जोश की इस ज़ोर से चिनगारियाँ।
तब क्यों रहें दुःखमें पड़ी इस देशकी सुकुमारियाँ ॥

स्त्री०—(उठते हुए) तो क्या पुरुषों के विरुद्ध उठना पड़ेगा ?

टेसु०—(दृढ़ता के साथ) हाँ पुरुषों की अक्ल की मरम्मत करने के लिये निहायत जरूरी है कि नारियाँ उठें ! वग़ैर ऐसा किए काम नहीं चलेगा ! मर्द वह पत्थर है जो बिना मजबूत हथोड़े के ठीक नहीं बनता !

स्त्री०—लेकिन उपाय इसका ?

टेसु०—उपाय करना मेरा काम ! तुम बेफ़िक्र रहो।

बार खाली जा नहीं सकता हमारी चाल का।
भाव पड़जाएगा मालुम उनको आटे-दाल का ॥

(जाना)

———

चौथा-दृश्य

(स्थान—मि० दिलफड़कके घरका दर्वाजा, टेसुआ एक बोर्ड लाकर दर्वाजे पर टांगता है ! लिखा है,—(No Admmission)
'बग़ैर इजाजत भीतर मत जाओ !'
खुद एक कुर्सी डाल, दर्वाजे पर बैठता है !)

मि०—(अपनी धुन में, हाथ में हैट लिए, खुले बटन, खुली टाई के प्रवेश)—हत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी ! जिस दिन से ईं जानिब ने दुनियाँ के पर्दे पर क़दम रखा कि साथ-साथ कम्बख़्ती भी नमूदार हुई ! जैसे ही बी० ए० के दलदल से निकला कि आँखें वान्टेड ढूँढ़ने में मशग़ूल हो गईं ! लेकिन यह कहो कि बड़े-बूढ़ों की ख़ुशामद शिफ़ारिश ने मुझे बूट-पालिश या खुद-कुशी के चक्कर से बचा लिया ! खुदा न ख़ास्ता अगर ऐसा न होता···?—मैं क्या कहूँ—मेरे सैकड़ों दोस्त आज महसूस कर रहे हैं ।

हाँ, तो नौकरी तो लग गई । लेकिन ऐसी बेढब कि जिसका बयान करना गोया अपनी कन्डीशन का वॉक आउट करना होता है ! सुबह दस से लेकर शाम के पांच बजे तक वह कमर-तोड़ मिहनत करनी पड़ती है !···कि हज़रत जिस्म-साहब भी याद फ़रमा उठते हैं कि अजब मेहनती से पाला पड़ा ! और तारीफ़ यह कि इस बीच इतनी झिड़कियाँ, गालियां, फटकारें कान-शरीफ़ों को सुननी पड़ती हैं कि तोबा कर लिया जाय तो बेजा नहीं !

खुदाजानें—किस मनहूस के कम्बख्त-दिमाग़ से यह नौकरी का खूँख्वार पेशा ईजाद हुआ है! वाह! आदमी का नौकर आदमी! अरे, इनसे तो जानवर अच्छे, जिनमें मालिक नौकर का डिफरैन्स नहीं! तोबा करो, तोबा…! (दर्वाजे के भीतर जाना चाहते हैं)

टेसु०—(ठेलते हुऐ) हैं! हैं!! मारडाला! यह क्या कर रहे हैं—आप?

मि०—(डपटकर) अबे, क्यों? घर जा रहा हूँ! मेरा घर, मैं उसका मालिक! तू कौन?

टेसु०—हजरत! देखिये तो—(बोर्ड पर उँगली रखते, पढ़ते हुऐ) क्या लिखा है?

मि०—(पढ़कर) हूँ…ऊं! यह बात? मगर यह उलट-फेर कैसी?

टेसु०—(मुँह बनाकर) मारडाला! अजी वाह! आप अच्छे जैन्टिलमैन हैं! जानते नहीं—अब दुनियाँ चाहती है—इन्कलाब जिन्दाबाद!

मि०—(चिढ़कर) तो क्या इसकी शुरुआत मेरे ही घर से होगी—क्यों…? यह बोर्ड मेरे लिए नहीं, क्यों कि मैं इस घर का मालिक हूँ!…समझा?

टेसु०—(जोर से हँसकर) भई, मारडाला! वाह! वाह!! कानून भी दो-तरह का होने लगा—बाहिरी और घरू? (दृढ़ता से) बाबू! होश की दवा फाँकिये! क़ानून, क़ानून है। उसकी

नज़र में नौकर- मालिक एक होते हैं ! समझे साहिब ?—

ढीली-धोती या पैजामा डटरही पतलून है !

देखता इसको न जो दर अस्ल वह क़ानून है !!

मि०—(संजीदगी के साथ) तो क्या इरादा है ?

टेसु०—वही, जो कानून की पावन्दी के लिए मुनासिब हो सकता है ! (मुँह बनाकर) मारडाला !

मि०—यानी—

टेसु०—बग़ैर अपनी मालकिन की इजाज़त हासिल किए हर्गिज़ न जाने दूँगा !

मि०—(स्वतः) अजब मुश्किल है ! इस न्यू-लाइट के मारे तो अभी से आँखें झपकने लगीं ! (प्रगट) अच्छा जाओ, पूछो !

टेसु०—जो हुक्म ! (जाता है ! फिर शीघ्र ही लौटकर)-मारडाला ! दस मिनिट ठहरिऐ। अभी उन्हें फ़ुर्सत नहीं !

मि०—(ताज्जुब से) हँय ! यह मामला क्या है—आज ?

टेसुआ०—(मुँह बनाकर) मारडाला !—

कायदे की तोप है क़ानून की संगीन है !

मामला कुछ भी नहीं यह आज कल का सीन है !!

मि०—(स्वतः) हत्तेरी ऐसीकम तैसी !—

या खुदा किस ग़म में डाला, दिल भी पत्थर बन गया !

खूब ! न्यू-लाइट का दौरा, घर भी दफ़्तर बन गया !!

यहाँ भूख के मारे पेटमें चूहे जिमनास्टिक कर रहे हैं, और

वहाँ देर है !—

घर में जाने के लिऐ भी दस मिनट की देर है !
ओह ! यह कैसा जमाने में चला अन्धेर है !!
थी ख़रीदी वॉच हमने यह यक़ीनन-बोल है !
आज लेकिन लेलिया हमको घड़ी ने मोल है !!

टेसु०—(झुककर) मारडाला !—(घन्टी की आवाज़ आती है)
जाइये हुजूर ! मालकिन याद फ़रमा रही हैं !
(मि० दिल फड़क जाते हैं। टेसुआ गाने लगता है !)

गाना—

फैशन की आई बहार ! न्यू-जैंटिलमैंनो !
पतलून, टाई, हैट से खुद कोस जाइये !
सिगसरेट दबा शान से धूँआं, उड़ाइये !!
मतलब नहीं कि आपकी नौलेज है कितनी-
बस, मस्त हो इस गीतको दिन रात गाइये !
फैशन की आई बहार ! न्यू-जैंटिल मैंनो !

लेकर के एक बीबी हवा खाने जाइये !
गर हो न तो किराये की लेकर ही आइये !!
बर्ना-रहेगी आपके फैशन की किरकिरी—
अपने को 'रूड' होने से फौरन बचाइये !!
फैशन की आई बहार ! न्यू-जैन्टिलमैनो !

देखी जो ब्यूटीफुल कि एक्सीडैन्ट हो गया !
दिल सूखा इस तरहकि पिपरमैन्ट होगया !!

वह बोलीं-'क्या हुआ ?' तो कहा-कुछ नहीं जनाब—
सब लिखना-पढ़ना आपको प्रेजैन्ट हो गया !!
फैशन की आई बहार !
न्यू-जैंटिलमैंनो !
(जाना)

पांचांव-दृश्य

(स्थान—दिलफड़क का घर ! स्त्री, अर्ध-नग्न अपटूडेट-ड्रेस में, हाथ में अखबार लिए,-आकर कुर्सी पर डट जाती है ! मि० दिल फड़क दूसरी ओर से आते हैं। नैपथ्य में बच्चे के रोने की आवाज़)

मि०—(ताज्जुब से) हैंय ! यह क्या ?—

थे जहाँ पर खार खन्दक गुल वहाँ मौजूद है !
अब दिलों को वद गुमानी का असर वेसूद है !!
जिस के करने के लिए कोशिश नहीं थी कामयाब !
आज वह सब हो चुका या देखता जाता हूँ ख्वाब !!

स्त्री०—(घुड़क कर) बन्द कीजिए अपनी बकवास ! एक लेडी की इन्सैल्ट करने का आपको कोई हक़ नहीं ! आप हसबैण्ड हैं, ठीक है सब, वहीं तक रहिए !—

है जहाँ तक आपके हक़का हक़ीकी दायरा !
बर्ना यह मेरा रहा, और आपका यह रास्ता !!
बहुत दिन तक पा चुकी हूँ जुल्मे-नादानी की क़ैद !
अब नहीं हर्गिज सहूँगी मीठी-महमानी की क़ैद !!

मि०—(घबराकर) हत्तेरी ऐसी कम तैसी !···(स्वत) यह ज्वाला मुखी कैसे फटपड़ा ? (बच्चे के रोने की आवाज़) (प्रगट) अरे, बच्चा रो रहा है, उसे तो उठाओ, चुप करो !

स्त्री०—बच्चा ? बच्चा मेरा अकेले का नहीं । तुम भी पार्टनर हो, तुम्हारा भी है ।

दाया नहीं आया न तुम्हारी कनीज़ हूँ !
जो भी हूँ, कुछ हूँ हरतरह अपनी ही चीज़ हूँ !!
कुछ शर्म करो दिल में करो उस ख़ुदा का डर !
हक़ जिसने दिये मर्द--व--बीवी को बराबर !!

भूल जाओ, डियर ! उस ज़माने को भूल जाओ जब तुम नारी का पैर की जूती से मुकाबिला किया करते थे ! अब ज़माने की रविश बदल रही है ! ये बच्चा--पैदा करने की मशीनें भी अब अपना रवैया बदलना चाहती हैं !—

ड्यूटी पैदा करने की, बाक़ी तुम्हारा काम है !
क्यों कि सारा ख़ल्क़ तो लेता तुम्हारा नाम है !!

मि०—(स्वत:) हत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी ! अरे, यही हाल रहा तो मर्दों को भी बच्चा पैदा करने का काम लैना पड़ेगा । वाहरे, समानाधिकार ?— (प्रगट) मगर···मैंने कहा मैडम–साहिबा ! खाने के लिए तो बतलाती कि कहाँ रखा है ? भूख दम खाए जा रही है ।

स्त्री०—(क्रोध से)—छोड़ दो सम्बन्ध मेरा गर दिली मर्ज़ी नहीं ।
रोटियाँ जो मैं पकाऊँ कोई बावर्ची नहीं ॥

शर्म आना चाहिऐ। एक एजूकेटेड-वाइफ़ से इस तरह पेश आना, महज़ अक़्लमन्दी का ज़ाहिर करना है।

होटल खुले हुऐ हैं जाकर के खाइये!
या बैठकर हाउस में बच्चे खिलाइये!!

(मि० दिलफड़क बच्चेको कन्धे से ले, स्टेज पर चक्कर लगाते हैं)

स्त्री०—(कुर्सी से उठते हुए) मैं एक मीटिंग में स्पीच-ड्यूटी-अटैन्ड करने के लिए जा रही हूँ! दस बजे रात को लौटूँगी!

(जाती है)

मि०—(घबराकर) हत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी! अरे, यह क्या हुआ? पर्दे के बाहर होते ही इसे तो वह हवा लगी कि मेरे होश ठिकाने आगए! रहम करो—ईश्वर! मैं बाज़ आया ऐसी बे-पर्द-औरत से!

उसके मुँह पर था मेरी अक्ल पै छाया परदा!
उसने उलटा कि मेरा हट गया सारा परदा!!
समझा, पर्दे की ज़रूरत को मैं है क्या परदा!
था समझदार कि वह जिसने निकाला परदा!!

(जाना)

छटवाँ-दृश्य

(स्थान—वही, स्त्री स-क्रोध कुर्सी पर आकर डट जाती है। मि० दिलफड़क भागते हुए आकर स्त्री के बूट-सम्पन्न पैर को छूते हैं! माथे से लगाते हैं!)

मि०—(गिड़गिड़ाकर) बस, कुसूर माफ़ करो ! मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ, हाथ जोड़ता हूँ ! कहो जूते सिर पर रखलूँ !
(स्वतः) दुनियाँ वालो देखलो बे पर्दा ये मजमून है !
एज्यूकेटेड-बीबीयों का यह नया कानून है !!

बी०—(तमक कर) शटअप् ! मर्दों की चापलूसी-बातों ने स्त्रियों को दासी बनाकर सारे अधिकार हड़प लिए ! लाइये निकालिये—तलब ! रुपये-पैसे मेरे हाथ में रहने चाहिये ! गृह-लक्ष्मी मैं हूँ—तुम नहीं !

मि०—लीजिये ! लेकिन ख़फा न हूजिए ! (नोट निकाल कर सामने रख देते हैं !) मगर·········!

बी०—(नोट लेते हुए, बात काट कर) मगर क्या ?

मि०—(डरकर) इतने ही रुपयों से तीस दिन काटने होंगे !

बी०—नहीं, यह पावन्दी नहीं चल सकती ! अभी मुझे छह वी० पी०याँ छुड़ाना है ! चार पेपरों को मँगाना है ! और शूज़, साया, साड़ियाँ लिपस्टिक,—क्रीम सैन्ट-सभी-कुछ तो ख़रीदना है !

मि०—अरे, तब तो हुआ ढेर !

बी०—हूँय ! यह कैसी तहज़ीब ? क्या मुझे यह भी सिखाना पड़ेगी ?—सुनो, अगर तुम एक अपनी सभ्य-बीबी का ख़र्च भी बर्दास्त नहीं कर सकते तो—तुम्हें शादी करने का कोई अधिकार नहीं ?

मि०—(स्वतः) मगर हो तो बीबी ! यह तो एक हाथी का ख़र्च बँध गया मेरे सिर ! हत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी !—

है अजब आफ़त का मजमाँ दिल मेरा हैरान है !
इस तरफ रोटी, उधर ये सभ्यता की शान है !!
क्या कहूँ?—क्या पूछते हो, देखकर पहिचान लो !
अपने दिल पर हाथ रखकर सब हक़ीक़त जानलो !!

(स्त्री के एक दोस्त का प्रवेश)

दोस्त—(स्त्री से शेक हैन्ड करते हुए) ओ, माई डार्लिङ्ग ! चलो पार्क के लिए ! टाइम हो चुका !

स्त्री०—(हँसते हुए) चलो, माईडियर ! तुम्हारा ही इन्तजार था—चलो !

(दोनों हाथ-में-हाथ डालकर जाते हैं)

मि०—(करम ठोंक कर) हत्तेरी ऐसी कम तैसी ! उफ् ! यहाँ तक ? अब बर्दास्त नहीं !

ख़ून जमता जारहा है दिलकी हर्कत दूर है !
अक्ल भी मदहोश है जैसे नशे में चूर है !!
क्या किया ? यह अपने हाथों ही कुल्हाड़ी मारली !
मैं खड़ा देखा किया वह दूसरे के सँग चली !!

ओफ़ ! पर-पुरुष के साथ यह खुला बर्ताव ! यह चटकीली गुफ्तगू ?—

वाहरे फ़ैशन के ओ सुरदार बैण्ड !
मुझको झिड़की और उसको शेक् हैण्ड !!
दूर अब करना पड़ेगा इन्क़लाब !
बस, ख़तम अब हो चुका फैशनका ख्वाब !!

(जाना)

———

सातवाँ-दृश्य

(स्थान—पार्क, स्त्री और उसका दोस्त आनन्द से टहल रहे हैं ! दोस्त स्त्री का हाथ चूमता है, उसी समय मि० दिलफड़क का प्रवेश !)

मि०—(घबड़ाकर) अरे, यह क्या ?—हत्तेरी तक़दीर की ऐसी कम तैसी !—

लाज इज्ज़त आबरू फैशन ने मटिया मेट की !
मैं नहीं अब चाहता डिग्री ये ग्रेज्युएट की !!

स्त्री—क्या बक रहे हो ?—चुम्बन करना सभ्यता है ! फैशन है !! कोई नाजाइज़ बात नहीं !

आज कल की सभ्यता में हर्कतें सब माफ़ हैं !
सभ्य ऐमालों के यह इनलार्ज फोटो साफ़ हैं !!

मि०—(स्त्री के पैरों पर गिरकर) माफ़ करो, बस, बहुत हो चुका ! मुझे अब अपनी ग़लती मालुम हो गई ! मैं समझ गया कि वह मेरी भूल थी !

भूल थी फ़ैशन के दरिया का गजब तूफ़ान था !
एक कोरी सभ्यता के नाम का अरमान था !!
मिट गया, ठंडा पड़ा वह मेरे दिल का ज़लज़ला !
अब दिखाई दे उठा मुझ को सभी खोटा-भला !!
फिर उसी घूँघट में आओ तुम स्वदेशी चाल पर !
लाज अब मेरी रखो, कर ग़ौर मेरे हाल पर !!

दोस्त—(स्वतः) आगये अड्डे पर !—

जिन्हें गौरव न भारत का न अपनी पाक-हस्ती का !
उन्हीं पर भूत चढ़ता है नई फैशन परस्ती का !!
रिवाजें तोड़ कर जो इस तरह आज़ाद होते हैं !
लगाकर आग वह घर में यूँही बर्बाद होते हैं !!

स्त्री०—(दिलफड़क के पैरों पर गिर कर) तो लीजिये स्वामी !—

भूल जब महसूस करते सभ्यता के सीन को !
तो ज़रूरत क्या ?—बनूँ जो इस तरह बे-दीन को !!
सुबह भूले किन्तु घर को आगए जब शाम को !
माफ़ करिये, नाथ मेरे बे अदब अञ्जाम को !!

(स्त्री घूँघट काढ़ लेती है ! मि० दिल फड़क कोट, टाई उतार कर फैंक देते हैं ! नोट—इस सीन में स्त्री की पोशाक ऐसी होनी चाहिये—जो अपटूडेट होने पर भी जिससे घूँघट निकाला जा सके।)

दोस्त—(दोनों की ओर संकेत करते हुए)—

यह हमारे देश को गौरव मयी पोशाक है !
जो विदेशी चाल के हर ऐब से बेबाक है !!

(अपनी पोशाक बदलते हुए)—

जब मियाँ-बीवी लगे दोनों ही आटे-दाल में !
टेसूमल भी आगए अपनी पुरानी चाल में !!

मि०—(ताज्जुब से देखते हुए) हँय ! बीबी के दोस्त की जगह टेसुआ ?

टेसु०—(सविनय) नहीं, बाबू ! आपकी अक़ल की मरम्मत करने वाला एक मिस्त्री !

(सम्मिलित गायन)

मि०—(स्त्री से) तुम मेरी स्त्री !

टेसु०—(मि० से) मैं एक मिस्त्री !!

बीबी— दोनों जने घूँघट को सराहो दोनों जने!

मि०—(स्त्री से) तुमने सिखाया !

टेसु०—(मि० स) मैंने बचाया !!

बीबी— दोनों जने घूँघट को सराहो दोनों जने !

टेसु०—(मि० से) फिर देखो घूँघट !

मि०—(स्त्री से) अब छूटी खटपट !!

बीव— दोनों जने घूँघट को सराहो दोनों जने !

—END—